परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ की ओर

बोरावड़ में दो दिन

३ मार्च। आज प्रातः आचार्यवर ने कालवा से बोरावड़ के लिए प्रस्थान किया। आचार्यवर जैसे-जैसे नगर के समीप पहुंच रहे थे, जनता का सैलाब उमड़ता जा रहा था। गांव में प्रवेश से पूर्व ही जुलूस प्रारंभ हो गया। बोरावड़ मॉर्बल के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध मकराना से जुड़ा हुआ कस्बा है। गांव के गणमान्य नागरिक दूर तक पूज्यवर की अगवानी में पहुंचे। सरपंच हिम्मतसिंह राजपुरोहित सहित सभी वार्ड पंचों ने ग्राम पंचायत भवन में आचार्यवर का स्वागत किया। वहां से पूज्यप्रवर प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग के दोनों ओर खड़े सभी वर्ग और जाति के लोग आचार्यवर की अभिवंदना कर रहे थे। श्री दीपचन्दजी गेलड़ा के नोहरे में निर्मित भव्य प्रवचन पंडाल में पहुंच कर जुलूस स्वागत सभा के रूप में परिणत हो गया। आचार्यवर का प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

बोरावड़ में प्रवासित मुनिश्री पृथ्वीराजजी ने आचार्यवर को प्रथम बार वर्धापित कर आह्लाद की अनुभूति की। मकराना के विधायक श्री जाकिर हुसैन गैसावत ने क्षेत्र की ओर से आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा 'धर्म किसी समुदाय विशेष का नहीं होता। यह भावना से जुड़ी हुई चीज है। आचार्य महाश्रमणजी धर्म के मूर्तिमान रूप हैं। देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार और आतंकवाद को मिटाने में आपकी प्रभावी वाणी बहुत मददगार होगी।'

डीडवाना के विधायक श्री रूपाराम डूडी ने कहा 'महापुरुषों का जीवन समाज के उत्थान के लिए समर्पित होता है। आचार्यजी जन-जन में अहिंसा की चेतना जगाने के लिए अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। इससे सबको प्रेरणा मिलेगी।' नागोर जिले के कलेक्टर श्री एस.एस. बिस्सा ने आचार्यवर को युगपुरुष बताते हुए सभी से अणुव्रती बनने का आह्वान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'धर्म का पथ सभी के लिए सदैव खुला रहता है। संतों की वाणी व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से अनुप्राणित होने की प्रेरणा देती है। आचार्यप्रवर के इस स्वल्प प्रवास का बोरावड़ के लोग पूरा लाभ उठाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'अभाव और विवशता के कारण भोग में असमर्थ व्यक्ति को त्यागी नहीं कहा जा सकता। त्यागी वह है जो प्राप्त भोगों को स्वेच्छापूर्वक छोड़ दे। त्याग की साधना संयम से ही संभव है। जहां त्याग वहां धर्म, जहां भोग वहां अधर्म यह धर्म और अधर्म की छोटी और सरल परिभाषा है। अणुव्रत का मूल आधार भी संयम है।'

अहिंसा यात्रा के मूल उद्‌देश्य की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा 'व्यक्ति और समाज में अनुकंपा की चेतना जगाने के लिए हमने अहिंसा यात्रा प्रारंभ की है। अनुकंपा की चेतना जागृत और विकसित होगी तो व्यक्ति न दूसरों पर अत्याचार करेगा, न स्वयं पर। नशे की प्रवृत्ति में जाना अपने साथ अत्याचार है। भ्रूणहत्या तो महा क्रूर कर्म है। अनुकंपा की चेतना का विकास कर स्व और परकल्याण में स्वयं को नियोजित करें।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'पिछली बार मैं बोरावड़ पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ के साथ आया था। तब मुनिश्री मिलापचन्दजी स्वामी विद्यमान थे। वे वर्षों तक यहां स्थिरवासी रहे। अब वे नहीं हैं। मुनि पृथ्वीराजजी स्वामी के दर्शन हुए हैं। इन्होंने मुनिश्री मिलापचन्दजी एवं मुनि श्री जसकरणजी की बहुत सेवा की है। उन दोनों संतों की जुबान पर 'पिथु-पिथु' रहता था। पहली बार कर्नाटक और तमिलनाडु की यात्रा करने वाले मुनिश्री जसकरणजी और मुनिश्री मिलापचन्दजी तो चले गए, उनके साथ दीर्घकाल तक रहे मुनि पृथ्वीराजजी और मुनिश्री पानमलजी आज भी संघ की सेवा कर रहे हैं। ये अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए धर्मसंघ की खूब सेवा करते रहें।'

बोरावड़ के श्रावक समाज को विनीत और श्रद्धालु बताते हुए आचार्यवर ने परस्पर सौहार्द और सामंजस्य की चेतना जगाने का आह्वान किया। आज चतुर्दशी होने के कारण आचार्यवर ने हाजरी का वाचन करते हुए मर्यादा और अनुशासन की कुछ धाराओं का विवेचन किया। आचार्यवर ने कांकरोली में दिवंगत साध्वी कंचनकुमारीजी

(उदयपुर) का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया।

कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। रात्रि में मुनि उदितकुमारजी के सान्निध्य में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। स्थानीय महिला मंडल, कन्यामंडल और ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत और वक्तव्य के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। पूर्व विधायक श्री भंवरलाल राजपुरोहित एवं पूर्व पंचायत प्रधान श्रीराम भींचर ने भी अपने श्रद्धासिक्त विचार रखे।

धर्म के बिना जीवन अर्थहीन

४ मार्च। आज प्रातःकालीन प्रवचन में मंत्री मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' ने कहा 'धर्म आत्मशुद्धि का मार्ग है। धर्म से मन पवित्र बनता है। आत्मा की विशुद्धि नर को नारायण में परिवर्तित कर सकती है। जीवन के ऊर्ध्वारोहण में ही मनुष्य जीवन की सार्थकता है। संतों का पावन सान्निध्य पुण्योदय से मिलता है। बोरावड़ के लोगों के लिए यह परम सौभाग्य की बात है कि यहां तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता का पदार्पण हुआ है। इस दुर्लभ अवसर का अधिकाधिक लाभ उठाएं।

मंत्री मुनि के प्रवचन से पूर्व मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। भाजपा के पूर्व विधायक एवं जिलाध्यक्ष श्री हरीश कुमावत, पर्वतसर के विधायक श्री मानसिंह किनसरिया, पूर्व विधायक श्री भंवरलाल राजपुरोहित ने अणुव्रत और अहिंसा यात्रा के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर को मानव कल्याण के लिए समर्पित धर्म और अध्यात्म का महान पुरोधा बताया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

पूज्यप्रवर आज हल्का ज्वर होने के कारण डॉक्टरों के परामर्श के अनुसार प्रवचन में नहीं पधारे। किन्तु श्रद्धालुओं के लिए दर्शन सेवा का अवसर सुलभ रहा। बोरावड़ में श्रद्धा के लगभग १६५ परिवार हैं। सबमें अच्छी भक्तिभावना और उल्लास रहा। जैन-अजैन सभी समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर के इस दो दिवसीय प्रवास का पूरा लाभ उठाया। नगर में अहिंसा यात्रा की चर्चा रही। श्री नेमीचन्दजी अरिहंतकुमारजी गेलड़ा के सहयोग से बुक-स्टॉल पर साहित्य अर्द्धमूल्य पर उपलब्ध रहा। साहित्यप्रेमियों ने इस छूट का पूरा लाभ उठाया।

बोरावड़ से विहार

५ मार्च। आज प्रातः ११ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर किनसरिया स्थित ज्ञान विहार सीनियर सेकेंड्री स्कूल के विशाल परिसर में पधारे। मध्यवर्ती कोलाडूंगरी व बिदियाद गांव के लोगों ने अहिंसा यात्रा का स्वागत किया।

अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में आचार्यप्रवर ने ग्रामवासियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। अनेक लोगों ने पूज्यप्रवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। ज्ञान विहार स्कूल के निदेशक श्री गिरधारीलालजी मुदलिया ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में धर्म की महत्ता को रेखांकित किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने संबोधन में कहा 'सुख-शांति का अभिलाषी हर व्यक्ति है, किन्तु इसके अनुरूप आचरण सब नहीं करते। फलतः सुख-शांति के बजाय उन्हें दुःख ज्यादा मिलता है। जीवन में सुख और शांति की प्राप्ति के लिए धर्माचरण बहुत जरूरी है। धर्माचरण का प्राणतत्त्व है संयम। संयम अणुव्रत का भी आधार है।' कार्यक्रम का संचालन साध्वी शुभप्रभाजी ने किया।

६ मार्च। आज किनसरिया से १३ किमी. का विहार कर आचार्यवर परबतसर पधारे। यहां आपका प्रवास सीमा मेमोरियल कॉलेज में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में कॉलेज की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बाबा रामदेव शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष श्री देवारामजी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'इस दुनिया में सभी प्राणी सुख चाहते हैं। एक सुख वह होता है, जो बाह्य निमित्तों से मिलता है। दूसरा सुख वह है जो आदमी के भीतर से जुड़ा हुआ होता है। इसे भावात्मक और आत्मिक सुख भी कहा जा सकता है। यह सुख ही वास्तविक सुख है। बाह्य सुविधाओं

के प्राप्त होने पर भी कई बार व्यक्ति भीतर से दुःखी रहता है। यदि जीवनशैली स्वस्थ रहे तो व्यक्ति बाहर और भीतर दोनों ओर से सुखी रह सकता है।

विद्यालयी शिक्षा के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा 'विद्यालयों में प्राथमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में अध्यात्म और अहिंसा के चैप्टर का समावेश करना होगा। विद्यार्थी जीवन आस्था के निर्माण का महत्त्वपूर्ण समय है। शिक्षा के क्षेत्र में आज बहुत प्रगति हुई है। अनेक कॉलेज और विश्वविद्यालय खुले हैं, खुल रहे हैं। राज्य सरकारों का प्रयत्न है कि कोई भी नागरिक अशिक्षित न रहे। लेकिन शिक्षा प्राप्त करने का जो उद्देश्य है, उसे सर्वांगीण नहीं कहा जा सकता। अप्रिय लग सकता है, किन्तु इस कथन के पीछे यथार्थ है कि शिक्षा और शिक्षालय आज कमाई का जरिया बन रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है शिक्षा के साथ आजीविका और चरित्र-निर्माण का लक्ष्य भी जुड़ा रहे।'

आज मध्याह्न में पूज्य आचार्यवर के निर्देश पर प्रेक्षा प्रध्यापक मुनि किशनलालजी आदि संत स्थानीय कारागार में पधारे। वहां मुनिश्री ने विचाराधीन कैदियों के मध्य प्रवचन किया और प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक कैदियों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। मुनि विजयकुमारजी ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

सायंकाल परबतसर के सिंघवी परिवार को आचार्यवर की उपासना का अवसर मिला। सिंघवी परिवार ने प्रमुदित भाव से गुरुधारणा करते हुए तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार की। परिवार के सदस्यों का उल्लास दर्शनीय था।

७ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज १३ किमी. का विहार कर रूपनगढ़ पधारे। मार्ग में ग्रामवासियों के अनुरोध पर आचार्यवर गांव के जैन मन्दिर में पधारे। यहां जैन समाज के अनेक घर हैं।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने रूपनगढ़ में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा 'तृष्णा और महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होने पर आदमी दुःखी बन जाता है। लोभ और आसक्ति की प्रबलता भी दुःख का कारण बनती है। सुखी बनने के लिए कामनाओं का अतिक्रमण आवश्यक है। कामना के पाश से मुक्त व्यक्ति सुखी बन सकता है। मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है। इसे दुःख और संत्रास में बिता देना नादानी के सिवाय और कुछ नहीं।' पूज्य आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की संक्षिप्त अवगति दी।

८ मार्च। आज प्रातः रूपनगढ़ से १३ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'रलावता' पधारे। यहां आपका प्रवास स्थानीय विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में जनता को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा 'साधु किसी क्षेत्र, स्थान आदि से अनुबंधित नहीं होता। भोजन, वस्त्र आदि से भी उसकी प्रतिबद्धता नहीं होती। वह किसी व्यामोह में न पड़कर जहां रहे, वहीं रम जाए। वह वायु की तरह अप्रतिबद्ध रहे। किसी के प्रति ममत्व अथवा आसक्ति का भाव न रहे। साधु विद्वान बने या नहीं, किन्तु साधना का विकास उसमें निरंतर होता रहे।'

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा 'समाज के विकास में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। युग के साथ कदम बढ़ाते हुए महिलाएं सशक्त, शौर्यसंपन्न, विवेकसंपन्न और अर्हतासंपन्न बनें, किन्तु युगीन बुराइयों के संक्रमण से सर्वथा बचें। बच्चों को संस्कारवान बनाने का दायित्व मां पर ज्यादा होता है। महिलाएं इस दायित्व की अनदेखी न करें।'

उदयपुर में दिवंगत साध्वी कानकुमारीजी (सरदारशहर) का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए पूज्य आचार्यवर ने चतुर्विध धर्मसंघ के साथ उनकी स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया।

किशनगढ़ में भव्य स्वागत

९ मार्च। आज रलावता से पूज्यप्रवर ने किशनगढ़ के लिए विहार किया। तेरह किमी. का मार्ग, नागोर, जयपुर, अजमेर और मेवाड़ संभाग के लोगों का संगम स्थल बन गया। किशनगढ़ के लोग तो प्रफुल्लित थे ही, मेवाड़ संभाग के लगभग पांच सौ लोग यात्रा व्यवस्था दायित्व ग्रहण के अवसर पर पूज्य चरणों में पहुंचकर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। क्षेत्रीय विधायक श्री नाथूरामजी सिनोदिया ने पूज्यप्रवर की अगवानी करते हुए अपने क्षेत्र की जनता की ओर से स्वागत किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' ने मेवाड़ के लोगों

को रचनात्मक कार्य करने की प्रेरणा देते हुए पूज्य आचार्यवर की यात्रा के प्रति मंगल भावना व्यक्त की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'मेवाड़ के लोग दायित्व की प्रेरणा से अभिप्रेरित होकर बड़ी संख्या में यहां आए हैं। इस यात्रा में आचार्यवर के मिशन की अनुगूंज पूरे मेवाड़ में होनी चाहिए। 'नया मोड़' कार्यक्रम आज के संदर्भ में पूर्ण रूप से प्रासंगिक है। यह यात्रा एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सफल हो, ऐसा प्रयत्न होना चाहिए।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'संत वह, जो शान्त होता है। साधु महाव्रतों की साधना करता है। गृहस्थ कम से कम अणुव्रत को तो स्वीकार करे। बारह व्रतों की साधना गृहस्थ जीवन को निखार कर उसे साधुतुल्य बना देती है। गत वर्ष श्रावकों को बारह व्रती बनाने में साधु-साध्वियों ने अच्छी जागरूकता दिखाई। इस वर्ष बारह व्रत के साथ नशामुक्ति के अभियान को भी जोड़ा गया है। यह अभियान न केवल इतर समाज में, अपितु तेरापंथ समाज में भी व्यापक रूप से चलाया जाए।'

मेवाड़ के श्रावक समाज को संबोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'किशनगढ़ आने के साथ मेवाड़ सम्मुख आ गया है। पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अवशिष्ट यात्रा को पूर्णता की ओर ले जाने का निर्णय कर हम मेवाड़ की ओर बढ़ रहे हैं। मेवाड़ आचार्यश्री भिक्षु की नव्य दीक्षाभूमि और संकल्पभूमि है। वह तेरापंथ की जन्मभूमि है। मैंने पहले भी कहा है कि भैक्षव शासन मेरे लिए प्रथम है। मैं दिन-रात उसके लिए समर्पित रहना चाहता हूं। मुझे सात्विक प्रसन्नता है कि हम अपनी मातृभूमि की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी मेवाड़ यात्रा निष्पत्तिमूलक बने। मेवाड़ की जनता में धार्मिक और आध्यात्मिक उत्साह वृद्धिंगत होता रहे।'

इस अवसर पर मुनि विश्रुतकुमारजी ने 'आचार्यश्री महाश्रमण' कृति श्रीचरणों में उपहृत की। इस पुस्तक में पूज्य आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है।

किशनगढ़ नगर परिषद की अध्यक्षा श्रीमती गुणमाला पाटनी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए अभिनंदनपत्र का वाचन किया। नगर के गणमान्य लोगों ने अभिनंदन पत्र आचार्यवर को समर्पित किया। श्रीमती नीलम सिंघवी ने श्रद्धासिक्त गीत का संगान किया। अजमेर दरगाह के चिश्ती गुलाबनबी किबरिया ने पूज्यवर से अजमेर प्रवास के दौरान ख्वाजा साहब की दरगाह पर पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया, जिसे पूज्यवर ने प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया। साध्वी मधुबालाजी ने गुरुदर्शन कर उल्लसित भावों को अभिव्यक्ति देते हुए साध्वी सुखदेवांजी की जीवनी 'समता योग साधिका साध्वी सुखदेवांजी' पूज्यवर को उपहृत की।

www.terapanthinfo.com